सतनाम रामईया रामईया सतनाम

हरे रामा - हरे कृष्णा
कृष्णा-कृष्णा हरे-हरे

हरे कृष्णा - हरे रामा
रामा-रामा हरे-हरे

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी — जैता गुरु का बेटा

"तेरा भाणा मीठा लागै" - श्री गुरु अर्जुन देव जी

शहादत " साहिबज़ादा जुझार सिंह "

"झूठा संसार.....!"

Ⓐ **राम** गइओ रावन गइओ - जा कउ बहु परवार । कह नानक थिर कछु नही - सुपने जिउ संसार । चिंता ता की कीजीऐ - जो अनहोनी होइ । इह मारग संसार को - नानक थिर नही कोइ । जो उपजिओ सो बिनस है - परो आज के काल । नानक हरि गुन गाइ ले - छाड सगल जंजाल ।

Ⓑ **पांच** तत को तन रचिओ - जानहु चतुर सुजान । जिह ते उपजिओ नानका - लीन ताह मै मान । एक भगत भगवान - जिह प्रानी कैनाह मन । जैसे सूकर सुआन - नानक मानो ताह तन । तीरथ बरत अर दान कर - मन मै धरै गुमान । नानक निहफल जात तिह - जिउ कुंचर इसनान । सिर कमपिओ पग डगमगे - नैन जोत ते हीन । कह नानक इह बिध भई - तऊ न हरि रस लीन ।

Ⓒ **जग** रचना सभ झूठ है - जान लेहु रे मीत । कह नानक थिर ना रहै - जिउ बालू की भीत । मन माइआ मै रम रहिओ - निकसत नाहिन मीत । नानक मूरत चित्र जिउ - छाडित नाहिन भीत । नर चाहत कछु अउर - अउरै की अउरै भई । चितवत रहिओ ठगउर - नानक फासी गल परी । करणो हुतो स ना कीओ - परिओ लोभ के फंध । नानक समिओ रम गइओ - अब किउ रोवत अंध ।

Ⓓ **जनम** जनम भरमत फिरिओ - मिटिओ न जम को त्रास । कह नानक हरि भज मना - निरभै पावह बास । जिह माइआ ममता तजी - सभ ते भइओ उदास । कह नानक सुन रे मना - तिह घट ब्रहम निवास । उसतत निंदिआ नाह जिह - कंचन लोह समान । कह नानक सुन रे मना - मुकत ताह ते जान । हरख सोग जा कै नही - बैरी मीत समान । कह नानक सुन रे मना - मुकत ताह ते जान ।

Ⓔ **संग** सखा सभ तज गए - कोऊ न निबहिओ साथ । कह नानक इह बिपत मै - टेक एक रघुनाथ । नाम रहिओ साधू रहिओ - रहिओ गुर गोबिंद । कह नानक इह जगत मै - किन जपिओ गुर मंत । राम नाम उर मै गहिओ - जा कै सम नही कोइ । जिह सिमरत संकट मिटै - दरस तुहारो होइ ।

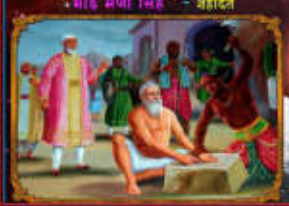

" भाई मणी सिंह " - शहादत

" भाई मतिदास " - शहादत

कहत कबीर सुनहु रे लोई । राम नाम बिन मुकत न होई .....! एक राम दशरथ का बेटा - एक राम घट घट में बैठा । एक राम को सकल पसारा - एक राम त्रिभुवन से न्यारा.....!

"झूठा संसार.....!"

1. राम गइओ रावन गइओ - जा कउ बहु परवार । कह नानक थिर कछु नही - सुपने जिउ संसार ।

अर्थ:- हे नानक ! कह: (हे भाई! श्री) राम (चंद्र) कूच कर गया, रावण भी चल बसा जिसको बड़े परिवार वाला कहा जाता है। (यहाँ) कोई भी सदा कायम रहने वाला पदार्थ नहीं है। (यह) जगत सपने जैसा (ही) है।

चिंता ता की कीजीऐ - जो अनहोनी होइ । इह मारग संसार को - नानक थिर नही कोइ ।

अर्थः- हे नानक ! (कहः हे भाई ! मौत आदिक तो) उस (घटना) की चिन्ता करनी चाहिए जो कभी घटित होने वाली ना हो । जगत की तो चाल ही यह है कि (यहाँ) कोई जीव (भी) सदा कायम रहने वाला नहीं है ।

जो उपजिओ सो बिनस है - परो आज कै काल । नानक हरि गुन गाइ ले - छाड सगल जंजाल । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1429)

अर्थः- हे नानक ! कहः (हे भाई ! जगत में तो) जो भी पैदा हुआ है वह (अवश्य) नाश हो जाएगा (हर कोई यहाँ से) आज या कल कूच कर जाने वाला है । (इसलिए माया के मोह के) सारे फंदे उतार के परमात्मा के गुण गाया कर ।

a. पांच तत को तन रचिओ - जानहु चतुर सुजान । जिह ते उपजिओ नानका - लीन ताह मै मान ।

अर्थः- हे नानक ! (कहः) हे चतुर मनुष्य ! हे समझदार मनुष्य ! तू जानता है कि (तेरा ये) शरीर (परमात्मा ने) पाँच तत्वों से बनाया है । (ये भी) यकीन जान कि जिस तत्वों से (ये शरीर) बना है (दोबारा) उनमें ही लीन हो जाएगा (फिर इस शरीर के झूठे मोह में फंस के परमात्मा का स्मरण क्यों भुला रहा है ?

एक भगत भगवान - जिह प्रानी कै नाह मन । जैसे सूकर सुआन - नानक मानो ताह तन ।

अर्थः- हे नानक ! (कहः हे भाई!) जिस मनुष्य के मन में परमात्मा की भक्ति नहीं है, उसका शरीर वैसा ही समझ जैसा (किसी) सूअर का शरीर है (या किसी) कुत्ते का शरीर है ।

तीरथ बरत अर दान कर - मन मै धरै गुमान । नानक निहफल जात तिह - जिउ कुंचर इसनान ।

अर्थः- हे नानक ! (कहः हे भाई! परमात्मा का भजन छोड़ के मनुष्य) तीर्थ-स्नान करके व्रत रख के, दान-पुण्य कर के (अपने) मन में अहंकार करता है (कि मैं धर्मी बन गया हूँ, पर) उसके (ये सारे किए हुए कर्म इस प्रकार) व्यर्थ (चले जाते हैं) जैसे हाथी का (किया हुआ) स्नान ।

सिर कमपिओ पग डगमगे - नैन जोत ते हीन । कह नानक इह बिध भई - तऊ न हरि रस लीन । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1428)

अर्थः- हे नानक ! कहः (हे भाई! बुढ़ापा आ जाने पर मनुष्य का) सिर काँपने लग जाता है (चलते हुए) पैर थिड़कने लगते हैं, आँखों की ज्योति मारी जाती है (बुढ़ापे से शरीर की) यह हालत हो जाती है, फिर भी (माया का मोह इतना प्रबल होता है कि मनुष्य) परमात्मा के नाम के स्वाद में मगन नहीं होता ।

b. जग रचना सभ झूठ है - जान लेहु रे मीत । कह नानक थिर ना रहै - जिउ बालू की भीत ।

अर्थः- नानक कहता है: हे मित्र ! यह बात सच्ची जान कि जगत की सारी रचना ही नाशवान है । रेत की दीवार की तरह (जगत में) कोई भी चीज़ सदा कायम रहने वाली नहीं है ।

मन माइआ मै रम रहिओ - निकसत नाहिन मीत । नानक मूरत चित्र जिउ - छाडित नाहिन भीत ।

अर्थः- हे नानक ! (कहः) हे मित्र ! जैसे (दीवार पर किसी) मूर्ति का बनाया हुआ चित्र दीवार को नहीं छोड़ता, दीवार के साथ ही चिपका रहता है, वैसे ही जो मन माया (के मोह) में फंस जाता है, (वह इस मोह में से अपने आप ही) नहीं निकल सकता ।

नर चाहत कछु अउर - अउरै की अउरै भई । चितवत रहिओ ठगउर - नानक फासी गल परी ।

अर्थः- हे नानक ! (कहः) हे भाई ! (माया के मोह में फंस के) मनुष्य (प्रभु-नाम-जपने की जगह) कुछ और ही (भाव, माया ही माया) मांगता रहता है । (पर, कर्तार की रजा में) और की और ही हो जाती है (मनुष्य सोचता कुछ है हो कुछ जाता है) । (मनुष्य और लोगों को) ठगने की सोचें सोचता है (लेकिन मौत का) फंदा (उसके) गले में आ पड़ता है ।

करणो हुतो स ना कीओ - परिओ लोभ कै फंध । नानक समिओ रम गइओ - अब किउ रोवत अंध । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1428)

अर्थः- हे नानक ! (कहः माया के मोह में) अंधे हो रहे मनुष्य ! जो कुछ तूने करना था, वह तूने नहीं किया (सारी उम्र) तू लोभ के फंदे में (ही) फसा रहा । (जिंदगी का सारा) समय (इसी तरह ही) गुजर गया । अब रोता क्यों है ? (अब पछताने से क्या फायदा ?)।

c. जनम जनम भरमत फिरिओ - मिटिओ न जम को त्रास ।
कह नानक हरि भज मना - निरभै पावह बास ।

अर्थः- हे भाई ! (परमात्मा का स्मरण भुला के जीव) अनेक जन्मों में भटकता फिरता है, जमों का डर (इसके अंदर से) खत्म नहीं होता । हे नानक ! कहः हे मन ! परमातमा का भजन करता रहा कर, (भजन की इनायत से) तू उस प्रभु में निवास प्राप्त कर लेगा जिसको कोई डर छू नहीं सकता ।

जिह माइआ ममता तजी - सभ ते भइओ उदास । कह नानक
सुन रे मना - तिह घट ब्रहम निवास ।

अर्थः- हे नानक ! कहः हे मन ! सुन, जिस (मनुष्य) ने माया का मोह छोड़ दिया, (जो मनुष्य माया के कामादिक) सारे विकारों से उपराम हो गया, उसके दिल में (प्रत्यक्ष तौर पर) परमात्मा का निवास हो जाता है ।

उसतत निंदिआ नाह जिह - कंचन लोह समान । कह नानक
सुन रे मना - मुकत ताह तै जान ।

अर्थः- हे नानक ! कहः हे मन ! सुन, जिस मनुष्य (के मन) को स्तुति नहीं (डाँवा-डोल कर सकती), जिसको सोना और लोहा एक

समान (दिखते हैं, भाव, जो लालच में नहीं फंसता), यह बात (पक्की) समझो कि उसको मोह से छुटकारा मिल चुका है ।

हरख सोग जा के नही - बैरी मीत समान । कह नानक सुन रे मना - मुकत ताह तै जान । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1427)

अर्थः- हे नानक ! कहः हे मन ! सुन, जिस मनुष्य के हृदय में खुशी-ग़मी अपना जोर नहीं डाल सकती, जिसको वैरी और मित्र एक जैसे (मित्र ही) प्रतीत होते हैं, तू ये बात पक्की समझ कि उसको माया के मोह से निजात मिल चुकी है ।

d. संग सखा सभ तज गए - कोऊ न निबहिओ साथ । कह नानक इह बिपत मै - टेक एक रघुनाथ ।

अर्थः- हे नानक ! कहः (जब अंत के समय) सारे संगी-साथी छोड़ जाते हैं, जब कोई भी साथ नहीं निभा सकता, उस (अकेलेपन की) मुसीबत के समय भी सिर्फ परमात्मा का ही सहारा होता है (सो, हे भाई! सदा परमात्मा का नाम स्मरण किया करो) ।

नाम रहिओ साधू रहिओ - रहिओ गुर गोबिंद । कह नानक इह जगत मै - किन जपिओ गुर मंत ।

अर्थः- हे नानक ! कहः हे भाई ! इस दुनिया में जिस किसी (मनुष्य) ने (हरि-नाम स्मरण वाला) गुरु का उपदेश अपने अंदर बसाया है (और नाम जपा है, अंत के समय भी परमात्मा का) नाम (उसके) साथ (रहता) है, (वाणी के रूप में) गुरु उसके साथ रहता है, अकाल-पुरख उसके साथ है ।

राम नाम उर मे गहिओ – जा कै सम नही कोइ । जिह सिमरत संकट मिटै – दरस तुहारो होइ । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1429)

अर्थः- हे प्रभु ! जिस मनुष्य ने तेरा वह नाम अपने हृदय में बसाया है जिसके बराबर का और कोई नहीं और जिसको स्मरण करने से हरेक दुख-कष्ट दूर हो जाता है, उस मनुष्य को तेरा दर्शन भी हो जाता है।

2. किआ मागउ – किछ थिर न रहाई । देखत नैन – चलिओ जग जाई ।

अर्थः- मैं (परमात्मा से दुनिया की) कौन सी चीज माँगू ? कोई भी चीज सदा रहने वाली नहीं है; मेरी आँखों के सामने सारा जगत चलता जा रहा है ।

लंका सा कोट – समुंद सी खाई । तिह रावन घर – खबर न पाई ।

अर्थः- जिस रावण का लंका जैसा किला था, और समुंदर जैसी (उस किले की रक्षा के लिए बनी हुई) खाई थी, उस रावण के घर का आज निशान नहीं मिलता ।

इक लख पूत – सवा लख नाती । तिह रावन घर – दीआ न बाती ।

अर्थः- जिस रावण के एक लाख पुत्र और सवा लाख पौत्र (बताए जाते हैं), उसके महलों में कहीं दीया-बाती जलता ना रहा ।

चंद सूरज जा के तपत रसोई । बैसंतर जा के कपरे धोई ।

अर्थः- (ये उस रावण का वर्णन है) जिसकी रसोई चंद्रमा और सूरज तैयार करते थे, जिसके कपड़े बैसंतर देवता धोता था (भाव, जिस रावण के पुत्र-पौत्रों की रोटी पकाने के लिए दिन-रात रसोई तपती रहती थी और उनके कपड़े साफ करने के लिए हर वक्त आग की भट्ठियां जलती रहती थीं) ।

गुरमत रामै नाम बसाई । असथिर रहै न कतहूं जाई ।

अर्थः- (सो) जो मनुष्य (इस नाशवान जगत की ओर से हटा के अपने मन को) सतिगुरु की मति ले के प्रभु के नाम में टिकाता है, वह सदा अडोल रहता है, (इस जगत माया की खातिर) भटकता नहीं है ।

कहत कबीर सुनहु रे लोई । राम नाम बिन मुकत न होई ।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 481)

अर्थः- क्बीर कहता है: सुनो, हे जगत के लोगो ! प्रभु का नाम स्मरण के बिना (जगत के इस मोह से खलासी नहीं हो सकती) ।

a. एक राम दशरथ का बेटा - एक राम घट घट में बैठा ।
एक राम को सकल पसारा - एक राम त्रिभुवन से न्यारा ।

अर्थः- एक राम राजा दशरथ के पुत्र भगवान राम चंद्र को संदर्भित करता है । एक राम प्रत्येक प्राणी के भीतर निवास करने वाली चेतन आत्मा या मन का प्रतीक है । एक राम उस ब्रह्म (काल) को संदर्भित करता है, जो संपूर्ण दृश्य ब्रह्मांड का स्वामी है। वह 21 लोकों पर शासन करता है । एक राम सच्चे सर्वोच्च ईश्वर को संदर्भित करता है, जो तीन लोकों (त्रिभुवन) से परे हैं ।

अब आत्मा विशेष को चयन करना है कि उसे कौन सा राम चाहिए क्या उसे भौतिक राम के पीछे भागना है या उसे मन के पीछे भागना है या उसे इस समर्था विशेष के चक्रव्यूह में फसना है या उसे केवल एक परम चेतन महाशक्ति का चयन विशेष करना है ।

b. नागे आवन नागे जाना । कोइ न रहिहे राजा राना । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1157)

अर्थः- (जगत में) नगें आना है, और नगें ही (यहाँ से) चले जाना है । कोई राजा हो, अमीर हो, किसी ने यहाँ सदा नहीं रहना ।

c. बीत जैहै बीत जैहै - जनम अकाज रे । निस दिन सुन के पुरान - समझत नह रे अजान । काल तउ पहूचिओ आन - कहा जैहै भाज रे । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1352)

अर्थः- हे भाई ! (परमात्मा की भक्ति के बिना) मानव जीवन (का समय) जनम-उद्देश्य हासिल किए बिना ही गुजरता जा रहा है, लांघता जा रहा है । हे मूर्ख ! रात-दिन पुराण (आदिक पुस्तकों की कहानियाँ) सुन के (भी) तू नहीं समझता (कि यहाँ सदा बैठे नहीं रहना) । मौत (का समय) तो (नज़दीक) आ पहुँचा है (बता, तू इस ओर से) भाग के कहाँ चला जाएगा ।

d. जिह सिर रच रच बाधत पाग । सो सिर चुंच सवारह काग।

अर्थः- जिस सिर पर (मनुष्य) संवार-संवार के पगड़ी बाँधता है, (मौत आने पे) उस सिर को कौए अपनी चोंच से संवारते हैं ।

इस तन धन को किआ गरबईआ। राम नाम काहे न दृड़ईआ।

अर्थः- (हे भाई !) इस शरीर का और इस धन का क्या मान करता है ? प्रभु का नाम क्यूँ नहीं स्मरण करता ?

कहत कबीर सुनहु मन मेरे । इही हवाल होहिगे तेरे । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 330)

अर्थः- कबीर कहता है: हे मेरे मन ! सुन, (मौत आने पे) तेरे साथ भी ऐसा ही होगा ।

e. साधो रचना राम नाई । इक बिनसै इक असथिर मानै - अचरज लखिओ न जाई । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 219)

अर्थः- हे संत जनो ! परमात्मा ने (जगत की ये आश्चर्यजनक) रचना रच दी है (कि) एक मनुष्य (तो) मरता है (पर) दूसरा मनुष्य (उसे मरता देख के भी अपने आप को) सदा टिके रहने वाला समझता है । ये एक आश्चर्यजनक तमाशा है जो बयान नहीं किया जा सकता ।

f. नानक आखै रे मना - सुणीऐ सिख सही । लेखा रब मगेसीआ - बैठा कढ वही । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 953)

अर्थः- नानक कहता है: हे मन ! सच्ची शिक्षा सुन, (तेरे किए अमलों अर्थात तेरे किए कर्मों के लेखे वाली) किताब निकाल के बैठा हुआ ईश्वर (तुझसे) हिसाब पूछेगा ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

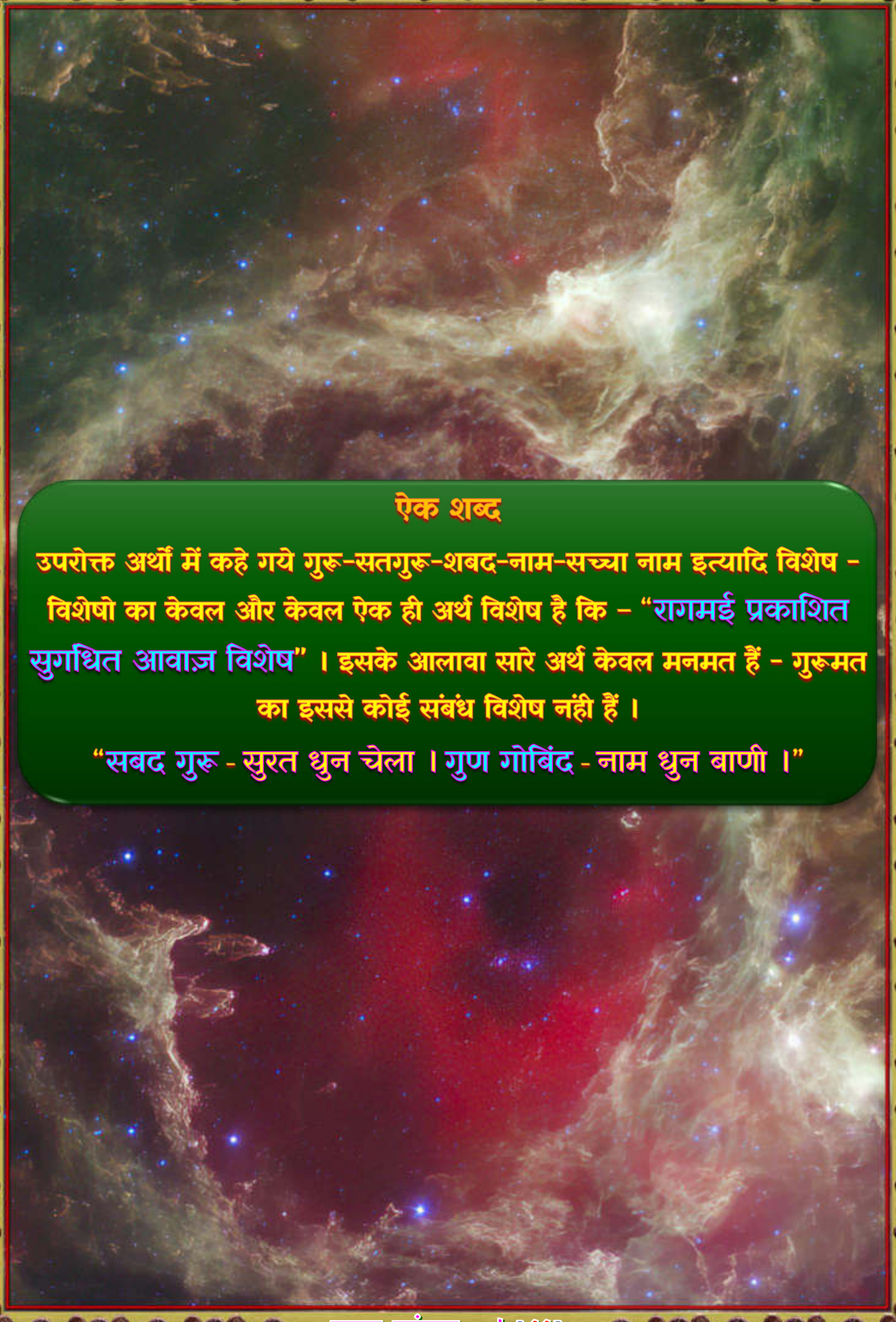

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"